

पद्य चालीस का गुप्त इतिहास — संख्या तेईस

यहेजकेल संख्या चार

Jeff Pippenger

2026-08-09

यहेजकेल की पहचान “विलाप करने वाले भविष्यद्वक्ता” के रूप में की जाती है, क्योंकि वह उन एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतीक है, जो उसकी पुस्तक के अध्याय नौ में देश और कलीसिया में किए गए घृणित कामों के कारण विलाप कर रहे हैं (आहें भरते और रोते हैं)। पिछली लेख में जिन Testimonies के अंश का हमने उद्धरण दिया था, उसमें सिस्टर व्हाइट ने लिखा, “भविष्यद्वक्ता स्वयं परदेश में एक परदेसी था, जहाँ असीम महत्वाकांक्षा और क्रूर बर्बरता का पूर्ण प्रभुत्व था। मनुष्य के अत्याचार और अन्याय के विषय में जो कुछ उसने देखा और सुना, उससे उसकी आत्मा व्यथित हो उठी, और वह दिन-रात कड़वे विलाप के साथ शोक करता रहा।”

एक लाख चवालीस हज़ार “इस्त्राएल के निष्कासित जन” हैं, जो तितर-बितर किए गए थे, जैसा कि यहेजकेल के बन्धुआई में ले जाए जाने द्वारा निरूपित किया गया है। यहेजकेल 9 में प्रदर्शित मुहर लगाने की प्रक्रिया वही है जो प्रकाशितवाक्य 7 में है, और इन दोनों अध्यायों को अन्तिम दिनों में घटित होते हुए प्रस्तुत किया गया है।

“परमेश्वर के दासों पर की जाने वाली यह मुहरबंदी वही है जो यहेजकेल को दर्शन में दिखाई गई थी।”

Testimonies to Ministers, 445.

सिंहासन से परमेश्वर करूबों का निर्देशन करता है, और वे आगे चलकर पहियों का संचालन करते हैं। दर्शन से यहेजकेल को समझना था कि परमेश्वर नियंत्रण में है, यहाँ तक कि उस काल में भी जब सब कुछ भ्रम की स्थिति में प्रतीत होता था। सिस्टर व्हाइट, परमेश्वर के सिंहासन पर स्थित उस व्यवस्था की रचना को प्रस्तुत करने के पश्चात्—जहाँ वह करूबों का निर्देशन करता है, जो पृथ्वी के कार्यों का प्रबन्ध करते हैं—“उसी प्रकार” कहती हैं, जैसा कि वह पवित्रस्थान में यूहन्ना का वर्णन करती हैं, जहाँ मसीह सात कलीसियाओं के बीच चलता था। यहेजकेल और यूहन्ना उन लोगों के प्रतीक हैं जो एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के समय में जीवित रहते हैं, जिनके विषय में, जैसा प्रेरणा ने अभिलिखित किया है, “The scenes to be enacted in our world are not yet even dreamed of.”

निश्चय ही, जब बहन व्हाइट ने वे शब्द लिखे थे, तब वे शब्द सत्य थे, परंतु मुहरबंदी के समय में वे अपनी परिपूर्ण पूर्ति पाते हैं। लगभग बीस वर्ष पहले, क्या आपने कभी सोचा होता कि जो अब संसार में घटित हो रहा है, उसका संबंध इस्लाम के टिड्डियों के झुंड के साथ होगा? प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में इस्लाम के प्रतीक के रूप में टिड्डियाँ, प्रकृति में उत्तरी अफ्रीका की टिड्डियों के प्रव्रजन को सम्मिलित करती हैं। अफ्रीका की उन झुंड बनाकर चलने वाली टिड्डियों का प्रव्रजन-पथ उस भूगोल के साथ मेल खाता है जिस पर इस्लाम ने अधिकार कर लिया था। इस्लाम इश्माएल का वंशज है, और इश्माएल की माता हाजिरा थी। हाजिरा का अर्थ है “उड़ान” या “भाग जाना।” अरबी में यह नाम सामान्यतः हाजर (هاجر) रूप में प्रस्तुत किया जाता है, और यह उसी मूल से संबंधित है जिससे हमें हिजरत (मुहम्मद का प्रव्रजन/पलायन) शब्द प्राप्त होता है। इस्लाम की जड़ें केवल टिड्डियों के झुंड से ही संबद्ध नहीं हैं, बल्कि उन जड़ों में प्रव्रजन का अर्थ भी सम्मिलित है। क्या किसी ने कभी यह कल्पना की थी कि अवैध आप्रवासन इस्लाम की टिड्डी का एक प्रकटीकरण है?

क्या किसी ने यह स्वप्न देखा था कि वैश्विक साम्यवादी इस्लामी भीड़ों के साथ एक गठबंधन बनाएँगे? इस्लाम और वैश्विकतावादियों की अजगर-शक्ति—दोनों ही क्रमशः प्रकाशितवाक्य 9/11 में अथाह गड़हे से ऊपर उठते हैं, और अथाह गड़हा शैतानी शक्ति की एक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य के पवित्रशास्त्रों के अनुसार वर्तमान के ये दोनों सहयोगी शैतान के औज़ार हैं।

“‘जब वे अपनी गवाही पूरी कर चुके होंगे [पूरी कर रहे होंगे]।’ वह अवधि, जिसमें उन दो गवाहों को टाट ओढ़े हुए भविष्यद्वाणी करनी थी, 1798 में समाप्त हुई। जब वे अपने उस कार्य की समाप्ति के निकट पहुँच रहे थे, जो अस्पष्टता में किया जा रहा था, तब उन पर उस शक्ति द्वारा युद्ध किया जाना था जिसका प्रतिनिधित्व ‘उस पशु’ के रूप में किया गया है ‘जो अथाह कुंड से ऊपर चढ़ता है।’ यूरोप की बहुत-सी जातियों में, कलीसिया और राज्य में शासन करने वाली शक्तियाँ सदियों तक पोपतंत्र के माध्यम से शैतान के नियंत्रण में रही थीं। परन्तु यहाँ शैतानी शक्ति की एक नई अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर कराई गई है।” — The Great Controversy, 268.

यहाँ सिस्टर व्हाइट फ्रांसीसी क्रांति के काल में समाजवाद के आगमन की पहचान करती हैं, साथ ही यह भी उल्लेख करती हैं कि शैतान पोपीय शक्ति को भी नियंत्रित करता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय सत्रह में पोपीय शक्ति भी अथाह कुण्ड में से निकलती है, और प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ में इस्लाम वह धुआँ है जो अथाह कुण्ड में से उठा। बात फिर भी वही बनी रहती है; क्या प्रेरणा का अभिप्राय वास्तव में यह था, “हमारे संसार में जो दृश्य घटित होने वाले हैं, उनका स्वप्न तक अभी नहीं देखा गया है?” किसने स्वप्न में भी सोचा था कि अब इस्लाम समूचे यूरोप में फैल जाएगा और अब अमेरिका महाद्वीपों पर उतर आएगा? क्या तुमने स्वप्न में देखा था कि टिड्डियाँ संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, और संयुक्त राज्य अमेरिका की डेमोक्रेटिक पार्टी के वैश्विकतावादियों द्वारा समस्त विश्व में फैला दी जाएँगी?

किसने यह स्वप्न देखा था कि शैक्षिक संस्थानों पर उस साम्यवादी और इस्लामी गठबंधन का आधिपत्य हो जाएगा, जिसका पोषण अब उन नागरिकों के कर-धन से किया जा रहा है, जिन्होंने कभी यह अभिप्रेत नहीं किया था कि उनका कर-धन उसी राष्ट्र के विनाश के लिए प्रयुक्त किया जाएगा जो वह कर-धन प्रदान कर रहा है।

किसने कल्पना की थी कि ग्रेट ब्रिटेन इस्लाम के द्वारा श्वेत लड़कियों के सामूहिक बलात्कार, अपहरण, बंधक बनाकर कैद किए जाने और हत्या का समर्थन करेगा और उसे बढ़ावा देगा? बहुत से लोग इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि मानव इतिहास में अब तक विद्यमान प्रत्येक साम्यवादी व्यवस्था पूर्णतः विफल रही है, परन्तु ब्रिटेन के समाजवाद का फल समाजवाद की उतनी ही निन्दा है जितनी उस व्यवस्था की आर्थिक और राजनीतिक दार्शनिकताओं की विफलता।

किसने यह कल्पना की होती कि पृथ्वी के व्यापारियों को सत्रह मिलियन से भी अधिक लोगों की सामूहिक हत्या को अंजाम देने के लिए विषैले पदार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाएगी?

किसने सोचा था कि जॉर्ज सोरोस, बिल गेट्स और एंथनी फाउची जैसे मनुष्यों को अपने दुष्टात्मिक दुष्कर्मों को पूर्णतः बिना किसी परिणाम के अंजाम देने की अनुमति दी जाएगी?

जब सिस्टर व्हाइट ने यह कहा कि जो दृश्य घटित किए जाएँगे, उनके विषय में स्वप्न में भी नहीं सोचा जाएगा, तब उन्होंने ऐसा एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन के समय के संदर्भ में कहा। वे मत्ती चौबीस में मसीह की उस चेतावनी पर अपनी टिप्पणियों को आगे बढ़ा रही थीं, जहाँ उन्होंने लिपिबद्ध किया, “ये शिक्षाएँ हमारे लाभ के लिए हैं। हमें अपना विश्वास परमेश्वर पर स्थिर रखना है, क्योंकि हमारे ठीक सामने ऐसा समय है जो मनुष्यों के प्राणों की परीक्षा लेगा। जैतून के पर्वत पर मसीह ने उन भयावह न्यायों का वर्णन किया जो उसके दूसरे आगमन से पहले होने वाले थे।”

जिन शिक्षाओं का उसने अभी-अभी उल्लेख किया था, वे पवित्रस्थान में यहजेकेल और यूहन्ना—दोनों—के उन दृष्टान्तों से संबंधित थीं, जिनके द्वारा वे यह समझना सीख रहे थे कि परमेश्वर सब बातों पर नियंत्रण रखता है। इस समय जो भ्रम और विद्रोह चल रहा है, और जो इतिहास के आगे बढ़ने के साथ-साथ केवल और अधिक बढ़ता जाएगा, उसमें जो लोग परमेश्वर के दूत हैं—जिनका प्रतिनिधित्व केवल मन्दिर में यहजेकेल और यूहन्ना ही नहीं, वरन् यशायाह भी करता है—वे इतिहास के मार्ग में केवल तभी इस प्रकार आगे बढ़ेंगे कि प्रभु की महिमा हो, यदि वे यह समझें कि जिन बातों की हमने कभी कल्पना भी नहीं की, वे भी परमेश्वर के ही नियंत्रण में हैं।

वे पहिए जो अन्य पहियों को काटते हुए जाते हैं, उन घटनाओं को सम्मिलित करते हैं जिनकी कभी कल्पना भी नहीं की गई थी, और वही वे घटनाएँ हैं जो उस मुद्रांकन के समय में घटित होती हैं जो 9/11 को आरम्भ हुआ। जो शिक्षाएँ सीखी जानी हैं, वे केवल उन्हीं के द्वारा सीखी जाती हैं जो विश्वास के द्वारा परम पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं और मसीह को तथा उसके उस प्रकाश को देखते हैं जो सन्दूक से चमक रहा है। जब उस महिमा को, जैसा कि दसवें अध्याय में दानियेल द्वारा निरूपित किया गया है, देखा जाता है, तब वह वर्ग जो उस प्रकाश से लाभान्वित होता है, उनसे पृथक् कर दिया जाता है जो उस दर्शन से भाग गए।

और मैं, दानियेल, ने अकेले ही उस दर्शन को देखा; क्योंकि जो पुरुष मेरे संग थे, उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा; पर उन पर बड़ा भय और कंपकंपी छा गई, यहाँ तक कि वे अपने आप को छिपाने के लिये भाग गए।
दानियेल 10:7.

पिछले लेख के इस खंड से और भी बहुत कुछ निकाला जा सकता है, परंतु इस लेख को समाप्त करते हुए हम एक पहिए पर विचार करेंगे। पिछले लेख में हमने संख्या पच्चीस के प्रतीकवाद पर ध्यान दिया था, और उससे पहले हमने संख्या तीस पर कुछ समय लगाया था। यह जेकेल की पुस्तक से मिलने वाला प्रकाश केवल प्रतीकात्मक संख्याओं तक सीमित नहीं है, तथापि उलझन में से कुछ स्पष्टता सामने लाना आरंभ करने से पहले उन संख्यात्मक प्रतीकों में से कुछ से परिचित हो लेना उपयोगी है।

सत्रह

दो सौ पचास-पचास वर्षों की ये तीन भविष्यवाणियाँ सत्रह-वर्षीय एक अवधि की पहचान करती हैं, जो स्मूर्ना की कलीसिया के इतिहास के अंत में आरंभ होती है। 313 से 330 तक के सत्रह वर्ष पशु की मूर्ति की स्थापना का प्रतीकात्मक निरूपण करते हैं।

457 ईसा-पूर्व में आरम्भ हुए वे दो सौ पचास वर्ष 207 ईसा-पूर्व में समाप्त हुए, अर्थात् राफिया की लड़ाई के सात वर्ष बाद और पैनियम की लड़ाई के दस वर्ष पहले। राफिया से पैनियम तक सत्रह वर्ष थे, और यह दानियेल 11 के पद ग्यारह से पंद्रह में प्रस्तुत पद चालीस के गुप्त इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है।

टॉलेमी चतुर्थ फिलोपाटर (जिसे टॉलेमी चतुर्थ के नाम से भी जाना जाता है) वह शासक था जिसने 217 ईसा पूर्व में राफिया का युद्ध जीता था। उसने 221 ईसा पूर्व से 204 ईसा पूर्व तक टॉलेमिक मिस्र के राजा (और फ़िरौन) के रूप में शासन किया; इस प्रकार उसने सत्रह वर्ष तक राज्य किया। उसने अपना शासन राफिया के युद्ध से पहले आरम्भ किया, परंतु पानियम के युद्ध से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

राफिया का युद्ध, जो यूक्रेनी युद्ध का प्रतिनिधित्व करता है, 2014 में तब आरम्भ हुआ जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूक्रेन में एक रंग-क्रांति को उत्पन्न किया। दक्षिण का राजा टॉलेमी चतुर्थ व्लादिमीर पुतिन का प्रतिरूप है, जिसने 2000 में अपना शासन आरम्भ किया, अर्थात् उस वर्ष से एक वर्ष पहले जब 2001 में एक लाख चवालीस हजारों पर मुहर लगाने का कार्य आरम्भ हुआ। टॉलेमी की ही भाँति, पुतिन ने भी यूक्रेनी युद्ध से पहले शासन करना आरम्भ किया, जिसका प्रतिरूप 2014 में आरम्भ होने वाला राफिया का युद्ध है। पैनियम से पहले पुतिन, जिसका प्रतिरूप टॉलेमी है, हटा दिया जाता है। पुतिन ने 2000 में शासन आरम्भ किया, इस प्रकार वह मुहर लगाने के समय की शुरुआत के साथ मेल खाता है, जो अगले वर्ष 2001 में आरम्भ हुआ। टॉलेमी द्वारा निरूपित सत्रह प्रतीकात्मक वर्ष उस अवधि की पहचान कराते हैं जिसके दौरान पुतिन शासन करता है, और वह ऐसा मुहर लगाने के समय के दौरान करता है।

457 ईसा-पूर्व में आरम्भ हुए दो सौ पचास वर्षों की समाप्ति द्वारा निरूपित ट्रम्प उसी गुप्त इतिहास में स्थित है जिसमें पुतिन स्थित है; यह इतिहास सत्रह वर्षों का है, जिसका आरम्भ राफिया के युद्ध से होता है। अजगर (पुतिन) और झूठा भविष्यद्वक्ता (ट्रम्प) इस गुप्त इतिहास के भीतर स्थित हैं। उस इतिहास में वह पशु, जिसे “तेरे लोगों के लुटेरे” के रूप में निरूपित किया गया है और जो पोपीय सत्ता का प्रतीक है, राफिया से पानियम तक के उन सत्रह वर्षों के अंत में

स्थित है।

वर्ष 321 संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, और 321, 313 में मिलान की आज्ञाप्ति से लेकर 330 में साम्राज्य के विभाजन तक की सत्रह-वर्षीय अवधि के भीतर स्थित है।

जिस इतिहास का प्रतिनिधित्व उस घटना से होता है जिसे योशियाह का महान फसह कहा जाता है, वह यहूदियों के सत्रहवें जुबिली चक्र का आरम्भ करता है। योशियाह के फसह से लेकर, जो पुराने नियम में सबसे महान पुनरुत्थान है, 22 अक्टूबर तक का कालखंड 11 अगस्त, 1840 से 22 अक्टूबर, 1844 तक के मिलरवादी इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है; परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह 9/11 से लेकर रविवार के विधान तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन का समय योशियाह से लेकर 22 अक्टूबर तक के सत्रहवें जुबिली चक्र द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया है। सत्रह एक ऐसा प्रतीक है जो मुद्रांकन के समय की प्रमुख घटनाओं के साथ सम्बद्ध है, और संख्या सत्रह वह बिन्दु है जहाँ यहजेकेल के पहिए परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं।

दानियेल के चालीसवें पद के गुप्त इतिहास में, जैसा कि उसी अध्याय के दसवें से पंद्रहवें पदों में निरूपित है, ड्रैगन का संबंध टॉलेमी के राज्यकाल के द्वारा संख्या "17" से जोड़ा गया है। ग्यारहवें पद में राफिया के युद्ध से लेकर पंद्रहवें पद में राफिया के युद्ध तक का इतिहास "17" वर्षों का है। वह इतिहास डॉनल्ड ट्रम्प को उन दो युद्धों द्वारा निरूपित सत्रह वर्षों के मध्य में स्थापित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में ट्रम्प द्वारा गद्दी और स्थापित की गई पशु की मूरत 313 से 330 तक के "17" वर्षों द्वारा निरूपित है। अध्याय एक के प्रथम पद में यहजेकेल "17वें" जुबिली चक्र के तैंतीसवें वर्ष में है। क्या तुमने कभी स्वप्न में भी सोचा था कि संख्या सत्रह उन पहियों में से एक का प्रतिनिधित्व करती है, जिन्हें यहजेकेल ने परमपवित्र स्थान में देखा था?

यहजेकेल उन लोगों का प्रतीक है जो मुहर लगाए जाने के समय विश्वास के द्वारा परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर चुके हैं। वे पतरस के याजक हैं।

तुम भी जीवित पत्थरों के समान होकर एक आत्मिक भवन, अर्थात् एक पवित्र याजकवर्ग के रूप में निर्मित किए जाते हो, ताकि आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हों। 1 पतरस 2:5.

उन्हें परमेश्वर की पूर्व वाचा-प्रजा के लिए एक संदेश प्रस्तुत करने का दायित्व सौंपा गया है, जो उस समय उपेक्षित की जा रही होगी, यद्यपि उन्हें पहले ही चेतावनी दे दी गई है कि परमेश्वर की पूर्व वाचा-प्रजा न तो देखेगी और न सुनेगी।

और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो पत्र-ग्रन्थ मैं तुझे देता हूँ, उसे खा; अपने पेट को खिलाना और अपनी अंतड़ियों को उससे भर ले। तब मैंने उसे खाया; और वह मेरे मुँह में मधु के समान मीठा था। फिर उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने के पास जा, और उनसे मेरे वचन कह। क्योंकि तू ऐसी प्रजा के पास नहीं भेजा गया है जिसकी बोली अनजानी हो और जिसकी भाषा कठिन हो, परन्तु इस्राएल के घराने के पास; न बहुत-सी ऐसी जातियों के पास जिनकी बोली अनजानी हो और जिनकी भाषा कठिन हो, जिनके वचन तू समझ न सके। निश्चय यदि मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वे तेरी सुनते। परन्तु इस्राएल का घराना तेरी न सुनेगा, क्योंकि वे मेरी नहीं सुनते; क्योंकि इस्राएल का सारा घराना ढीठ और कठोरहृदय है। देख, मैंने तेरे मुख को उनके मुखों के साम्हने दृढ़, और तेरे माथे को उनके माथों के साम्हने दृढ़ कर दिया है। चकमक पत्थर से भी अधिक कठोर हीरे के समान मैंने तेरा माथा कर दिया है; उनसे मत डर, और न उनके मुख देखने से व्याकुल हो, यद्यपि वे विद्रोही घराना हैं। यहजेकेल 3:3-9।

यहजेकेल को यह निर्देश दिया गया है कि वह पूर्व वाचा-प्रजा के लिए एक संदेश का प्रचार करे, जिसका प्रतिनिधित्व मिलेराइट इतिहास के प्रोटेस्टेंटों और अंतिम दिनों की लाओदीकिया स्थित सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया द्वारा होता है। यदि वह उस संदेश का प्रचार करने से इन्कार करे, तो जो लोग बिना चेतावनी के छोड़ दिए गए हैं उनका लहू उसी पर होगा।

हे मनुष्य के सन्तान, मैंने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरेदार ठहराया है; इसलिये तू मेरे मुख से वचन सुन, और मेरी ओर से उन्हें चेतावनी दे। जब मैं दुष्ट से कहूँ, तू निश्चय ही मरेगा; और तू उसे चेतावनी न दे, और दुष्ट को उसके दुष्ट मार्ग से फेरने के लिये न बोले, कि उसका प्राण बचे; तो वह दुष्ट मनुष्य अपने अधर्म में मरेगा; परन्तु उसका लोहू मैं तेरे हाथ से लूँगा। तौभी यदि तू दुष्ट को चेतावनी दे, और वह अपनी दुष्टता से, और अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह अपने अधर्म में मरेगा; परन्तु तूने अपना प्राण बचा लिया होगा। फिर जब कोई धर्मी अपनी धार्मिकता से फिरकर अधर्म करे, और मैं उसके सामने ठोकर खिलाने की वस्तु रखूँ, तो वह मरेगा; क्योंकि तूने उसे चेतावनी नहीं दी, इस कारण वह अपने पाप में मरेगा, और उसके जो धर्म के काम उसने किए हैं उनका स्मरण न किया जाएगा; परन्तु उसका लोहू मैं तेरे हाथ से लूँगा। तौभी यदि तू धर्मी को चेतावनी दे कि धर्मी पाप न करे, और वह पाप न करे, तो वह निश्चय जीवित रहेगा, क्योंकि उसे चेतावनी दी गई; और तूने भी अपना प्राण बचा लिया होगा। यहजकेल 3:17-21.

यहेजकेल की पहली 'ग्यारह' अध्यायों में उसे यरूशलेम के विनाश का दर्शन कराया जाता है, जिसे कबार नदी, मैदान और यरूशलेम के दर्शनों द्वारा चित्रित किया गया है। उसे यह दायित्व सौंपा जाता है कि वह यरूशलेम पर आने वाले निकटवर्ती न्याय की चेतावनी का प्रचार करे। यरूशलेम पर आने वाले इस निकटवर्ती न्याय की चेतावनी वही चेतावनी है जो पहले लौदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया को दी जाती है। यह चेतावनी यरूशलेम में परमेश्वर की उस प्रजा के न्याय और अस्वीकृति की पहचान कराती है, जिनके पास परमेश्वर की मुहर नहीं है। यहजकेल द्वारा पूर्वछायित यह चेतावनी शीघ्र आने वाले संडे कानून की चेतावनी है।

उन प्रथम ग्यारह अध्यायों में, जहाँ ये सत्य प्रतिपादित किए गए हैं, यहजकेल को गूँगा कर दिया जाता है, और इसके पश्चात वह केवल तभी बोलता है जब परमेश्वर विशेष रूप से उसका मुँह खोलता है; और यह स्थिति यरूशलेम के विनाश तक बनी रहती है, जिसके पश्चात वह फिर बोल सकता है।

तब आत्मा मुझ में प्रवेश कर गई, और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा किया, और उसने मुझसे बात की, और मुझसे कहा, जा, अपने घर के भीतर अपने को बन्द कर ले। परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, देख, वे तुझ पर बन्धन डालेंगे, और तुझे उनसे बाँध देंगे, और तू उनके बीच बाहर न जा सकेगा। और मैं तेरी जीभ को तेरे तालु से चिपका दूँगा, जिससे तू गूँगा हो जाएगा, और उनके लिए डाँटनेवाला न ठहरेगा; क्योंकि वे विद्रोही घराना हैं। परन्तु जब मैं तुझसे बात करूँगा, तब मैं तेरा मुँह खोल दूँगा, और तू उनसे कहना, 'प्रभु यहोवा यों कहता है'; जो सुनता है, वह सुने; और जो नहीं मानता, वह न माने; क्योंकि वे विद्रोही घराना हैं। यहजकेल 3:24-27।

जब यरूशलेम गिर पड़ा, तब यहजकेल एक बार फिर बोल सकता था।

और ऐसा हुआ कि हमारी बन्धुवाई के बारहवें वर्ष में, दसवें महीने के पाँचवें दिन, यरूशलेम से बचकर निकला हुआ एक मनुष्य मेरे पास आया और कहने लगा, नगर नाश कर दिया गया है। और जो बचकर निकला हुआ था, उसके आने से पहिले संध्या के समय यहोवा का हाथ मुझ पर हुआ था; और उसने प्रातः उसके मेरे पास आने तक मेरा मुँह खोल दिया था; सो मेरा मुँह खुल गया, और मैं फिर गूँगा न रहा। यहजकेल 33:21, 22.

यरूशलेम का पतन अन्तिम दिनों में लौदीकिया की सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के पतन का प्रतिनिधित्व करता है। वह पतन उसी समय घटित होता है जब नौवें अध्याय में यरूशलेम में जिन पर मुहर की गई थी, उन्हें तब विजयी कलीसिया के रूप में उठा लिया जाता है। यरूशलेम के भीतर के लौदीकियाई बाहर निकाल लिए जाते हैं, और एक लाख चवालीस हजार को ऊपर उठाया जाता है जब महिमा का राज्य स्थापित किया जाता है। महिमा के उस राज्य का प्रतिरूप कूस पर अनुग्रह के राज्य की स्थापना द्वारा प्रस्तुत किया गया था। कूस पर अनुग्रह का राज्य रविवार के कानून पर महिमा के राज्य के साथ संगति रखता है, और ये दोनों राज्य यहजकेल की पुस्तक में स्थित भविष्यद्वाणी के इतिहास के क्रम में रखे गए हैं। पहले ग्यारह अध्याय, जब यहजकेल को पवित्रस्थान के संदर्भ में रखा जाता है, तब परमेश्वर की कलीसिया की शुद्धि के विषय में हैं, क्योंकि उसकी प्रजा लड़ाकू कलीसिया से, जिसे गेहूँ और जंगली बीजों से मिलकर बनी हुई परिभाषित किया गया है, विजयी कलीसिया में परिवर्तित हो जाती है, जो पिन्तेकुस्त की गेहूँ की भेंट से बनी हुई है।

और हे इस्राएल के अपवित्र दुष्ट प्रधान, जिसका दिन आ पहुँचा है, जब अधर्म का अंत होगा, प्रभु यहोवा यों कहता है: पगड़ी उतार दे, और मुकुट हटा दे; यह वैसा न रहेगा: जो नीचा है उसे ऊँचा किया जाएगा, और जो ऊँचा है उसे नीचा किया जाएगा। मैं उसे उलट दूँगा, उलट दूँगा, उलट दूँगा; और वह फिर न रहेगा, जब तक वह न आए जिसका उस पर अधिकार है; और मैं उसे वही दूँगा। यहजकेल 21:25-27.

सिदकिय्याह यहूदा का अंतिम राजा था, और पदों में वही “इस्राएल का दुष्ट प्रधान, जिसका दिन आ पहुँचा है” है। नबूकदनेस्सर यरूशलेम को लेने ही वाला था, और सिदकिय्याह का मुकुट बाबुल द्वारा उतार लिया जाना था, जिसे मादी और फारसी उलट देंगे; उन्हें आगे चलकर यूनानी उलट देंगे, और यूनानियों को रोम उलट देगा। तीसरा उलटाव रोम पर आकर पहुँचता है, जो वह ऐतिहासिक समय है जब वह राजा “जिसका अधिकार है” अनुग्रह के राज्य का मुकुट उस राज्य की स्थापना के समय, अर्थात् क्रूस पर, प्राप्त करेगा।

“‘अपवित्र दुष्ट प्रधान’ के लिए अंतिम लेखा-जोखा का दिन आ पहुँचा था। प्रभु ने यह आज्ञा दी, ‘पगड़ी उतार दे,’ ‘और मुकुट हटा दे।’ जब तक मसीह स्वयं अपना राज्य स्थापित न करें, तब तक यहूदा को फिर से राजा रखने की अनुमति न दी जानी थी। दाऊद के घराने के सिंहासन के विषय में यह दैवी आज्ञा दी गई: ‘मैं इसे उलट दूँगा, उलट दूँगा, उलट दूँगा,’ ‘और यह फिर न रहेगा, जब तक वह न आए जिसका इस पर अधिकार है; और मैं यह उसे दे दूँगा।’ यहजकेल 21:25-27।” पैगंबर और राजा, 451.

पिछली वर्षा के समय में, जो 9/11 को जीवितों का न्याय आरम्भ होने पर शुरू हुई, मसीह अपने महिमा के राज्य की स्थापना करता है।

“जब वे चारों स्वर्गदूत छोड़ देंगे, तब मसीह अपना राज्य स्थापित करेंगे।” स्पॉल्डिंग एंड मैगन, 3.

तैयारी की एक अवधि 9/11 से आरंभ होती है, और संडे लॉ के समय महिमामय पवित्र पर्वत सब पहाड़ियों और पर्वतों से ऊपर उठा दिया जाता है।

वह वचन जो आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में देखा। और अन्तिम दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत पहाड़ों की चोटियों पर स्थिर किया जाएगा, और वह सब पहाड़ियों से ऊँचा ठहराया जाएगा; और सब जातियाँ उसकी ओर उमड़ती चली आएँगी। और बहुत से लोग आकर कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के भवन में चढ़ चलें; और वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे; क्योंकि सिय्योन से व्यवस्था निकलेगी, और यहोवा का वचन यरूशलेम से। यशायाह 2:1-3।

9/11 को वायुओं को छोड़ दिया गया और फिर रोक दिया गया; इस प्रकार दानियेल दो के उस राज्य की स्थापना का आरम्भ चिह्नित हुआ, जो पर्वत में से काटे गए उस पत्थर के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सारी पृथ्वी को भर देता है।

“यह दर्शन 1847 में दिया गया था, जब सब्त मानने वाले ऐडवेंट भाइयों की संख्या बहुत थोड़ी थी, और उनमें से भी बहुत कम ऐसे थे जो यह समझते थे कि उसका पालन इतना महत्वपूर्ण है कि वह परमेश्वर की प्रजा और अविश्वासियों के बीच एक विभाजन-रेखा खींच दे। अब उस दर्शन की पूर्ति दिखाई देने लगी है। यहाँ उल्लिखित ‘उस क्लेश-काल का आरम्भ’ उस समय का संकेत नहीं करता जब विपत्तियाँ उँडेली जाने लगेंगी, वरन् उस अल्प अवधि का, जो उनके उँडेला जाने से ठीक पहले होगी, जबकि मसीह पवित्रस्थान में है। उस समय, जब उद्धार का कार्य समाप्ति पर होगा, पृथ्वी पर क्लेश आ रहा होगा, और जातियाँ क्रोधित होंगी, तौभी उन्हें रोके रखा जाएगा ताकि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न पड़े। उसी समय ‘पिछली वर्षा,’ अथवा प्रभु की उपस्थिति से आने वाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत की बुलन्द वाणी को सामर्थ्य दे, और पवित्र लोगों को उस अवधि में स्थिर खड़े रहने के लिए तैयार करे जब अन्तिम सात विपत्तियाँ उँडेली जाएँगी।” Early Writings, 85.

मसीह अपने अनन्त राज्य की स्थापना उत्तरवृष्टि के समय करता है, और उसके राज्य में अनुग्रह का वह राज्य भी सम्मिलित है जो क्रूस पर स्थापित किया गया था, तथा रविवार-व्यवस्था के समय उसकी महिमा का राज्य भी।

सिदकिय्याह से बाबुल (पहला राज्य), फिर मादी-फारस (दूसरा राज्य), फिर यूनान (तीसरा राज्य), और आगे बढ़ते हुए मूर्तिपूजक रोम (चौथा राज्य) तक का क्रम उस इतिहास की पहचान कराता है जो अनुग्रह के राज्य तक ले जाता है। वही इतिहास एक समानान्तर ऐतिहासिक क्रम की पहचान भी कराता है—पोपीय रोम (आध्यात्मिक बाबुल, पाँचवाँ राज्य) से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका (आध्यात्मिक मादी-फारस, छठा राज्य) तक, फिर संयुक्त राष्ट्र (आध्यात्मिक यूनान, सातवाँ राज्य) तक, और आगे बढ़ते हुए अजगर, पशु, और झूठे भविष्यद्वक्ता के त्रिविध संघ तक, जो मिलकर आधुनिक रोम का गठन करते हैं (आध्यात्मिक रोम, आठवाँ राज्य, जो उन सात में से है)।

दानियेल दो में उस राज्य की विजय एक चट्टान द्वारा निरूपित की गई है, और परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग मन्दिर में पत्थर हैं।

तुम भी, जीवित पत्थरों के समान, एक आत्मिक भवन के रूप में बनाए जाते हो, अर्थात् एक पवित्र याजकवर्ग, ताकि आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हों। 1 पतरस 2:5॥

वह अनन्त राज्य संसार के राज्यों पर जय प्राप्त करता है और समस्त संसार को भर देता है। यहजेकेल के चालीसवें अध्याय से लेकर उसकी पुस्तक के अंत तक, उसी राज्य को एक ऐसे मन्दिर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो जीवन के जल से संसार को भर देता है।

हम अगले लेख में इन बातों को आगे जारी रखेंगे।